राम संदेश

भक्ति, ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

पावन हों शिक्षा संस्कार
शुद्ध आचरण का आधार

काम काज हो या व्यापार
सभी जगह अच्छा व्यवहार

मित्र पड़ोसी घर परिवार
संबंधों में निश्छल प्यार

यदि हो पाएं तो संसार में
होगा सुख शांति प्रसार

वर्ष 65 | अक्टूबर-दिसम्बर 2017 | अंक 4

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

विषय सूची

क्रमांक		पृष्ठ
1.	भजन *गुरु तेग़ बहादुर*	01
2.	श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या *लालाजी महाराज*	02
3.	मनुष्यों की तीन प्रवृत्तियाँ *डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज*	08
4.	उपदेश *अनमोल वचन*	11
5.	तू साहिब मैं बन्दा तेरा *परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहब*	15
8.	हुसैन बसराई	22
9.	दादा गुरुदेव के पत्र	34

राम ॐ संदेश

संस्थापक
ब्रह्मलीन परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज
संरक्षक
ब्रह्मलीन परमसंत डॉ. करतार सिंह जी
सम्पादक
डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना
(सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष)

वर्ष 65 अक्टूबर–दिसम्बर 2017 अंक–4

भजन

जो नर दुख में दुख नहीं मानै,
सुख सनेह अरु भय नेहिं जाके, कंचन माटी मानै।

नहि विद्या नहिं उस्तति जाके, लोभ–मोह अभिमाना,
हरष सोक ते रहे नियारो, नाहिं मान–अपमाना।

आसा–मनसा सगल त्याग के, जगते रहै निरासा,
काम क्रोध जेहि परसै नाहिन, तेहि घट ब्रह्म निवासा।

गुर किरपा जे नर को कीन्हीं, ते एह जुगत पिछानी,
'नानक' लीन भयो गोविन्द स्यौं, ज्यो पानी संग पानी।

–गुरु तेग बहादुर

परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या

(पिछले अंक से आगे)

79

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसंगेन बधान्ति ज्ञानसंगेन चानघ ।।14।6।

अर्थः– हे अनघ (निष्पाप) उनमें से सतोगुण निर्मलता के कारण प्रकाश करने वाला, विकार रहित है और सुख तथा ज्ञान से संबंध बनाता है।

भावार्थः– सारे संसार (पृथ्वी, देव, आकाश) सब के कार्यकलाप तीन गुणों से ही है। वे हैं सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण। सतोगुण स्थिरता वाला निर्मल, प्रकाश रूप विकार रहित और सुख एवं ज्ञान का देने वाला है।

80

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम् ।
तन्निबधन्ति कौन्तेय कर्मसंगेन देहिनम् ।।14। 7।

अर्थः– हे अर्जुन! राग रूप रजोगुण को कामना और आसक्ति से उत्पन्न जान। वह जीवात्मा को कर्म के साथ बाँधता है।

भावार्थः– रजोगुण क्रियाशीलता वाला है। जब यह सत के साथ मिल जाये तो सतोगुणी और तम के साथ मिल जाये तो तमोगुणी कर्म हो जाता है।

81

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबधान्ति भारत ।।14।6।

अर्थः– हे अर्जुन! सब जीवों को मोहित करने वाला तमोगुण अज्ञान से उत्पन्न जानो। वह जीव को प्रमोद, आलस्य और निद्रा में फंसाता है।

भावार्थः– तमोगुण भी स्थिरता वाला, आलस्य, नींद, प्रमाद, अज्ञानता, नीच कर्म की ओर प्रेरित करने वाला है। इन्हीं दुर्गुणों के कारण काम, क्रोध, लोभ और मोह उत्पन्न होते हैं जो बुद्धि और विवेक पर पर्दा डालकर मनुष्य से और गलत पर गलत कार्य करवाये जाता है।

82

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः ।।14।8।

अर्थः– सतोगुण वाले ऊँचे लोकों को जाते हैं। राजसी मध्य यानी मनुष्य लोक में ही रहते हैं और निम्न गुण वृत्ति (तमोगुण) वाले अधोगति को प्राप्त होते हैं।

भावार्थः– ऐसा कोई समय नहीं और ऐसा कोई जीव नहीं जिसमें तीनों गुण न रहते हों। परन्तु जीवन का विश्लेषण करें तो पायेंगे कि किसी में सतोगुण अधिक है तो किसी में रजोगुण और कोई तमोगुण में ही फंसा रहा। सतोगुणी यदि सकामी भक्ति करते रहे तो स्वर्ग, निष्काम भक्ति की, तो आत्मज्ञान प्राप्त करेंगे और उच्च लोक अपवर्ग पायेंगे, राजसी इसी मानव लोक में पुर्नजन्म और तमोगुणी निम्न योनियों जैसे कीट, पशु वृक्ष आदि को प्राप्त होते हैं।

83

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ।।14।6।

अर्थः– जब तीनों गुणों से अन्य किसी को भी कर्ता नहीं देखे तो ऐसा दृष्टा साधक तीनों गुणों से परे यदि तत्व रूप को जाने तो मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है।

भावार्थः– जो कुछ भी है या हो रहा है वह सब इन तीन गुणों द्वारा ही है। ऐसा मानने वाला दृष्टा योगी इन तीन गुणों से परे तत्व रूप को यदि जानेगा तो मेरे स्वरूप को ही पायेगा। वह तत्व रूप जो तीनों गुणों से परे है (गुणातीत) है वो ही स्थित प्रज्ञ की शून्य अवस्था होगी वही प्रभु का वास्तविक दर्शन है।

84

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ।।14।26।

अर्थः– और जो अव्यभिचारिणी भक्ति द्वारा मुझको भक्तिभोग से भजता है वह भी इन तीन गुणों को लांघकर ब्रह्म को पाने योग्य बन जाता है।

भावार्थः– अव्यभिचारिणी भक्ति (यानी एकमत, एक गुरु, एक ढंग) को भगवान ने कितना ऊँचा बताया है कि जो ऐसी भक्ति करने वाला अनन्य प्रेम और श्रद्धा से लगा हुआ है वो भी तीनों गुणों के पार गुणातीत अवस्था को प्राप्त कर लेगा।

85

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ।।15।1 ।

अर्थः– ऊपर की ओर जड़, नीचे की ओर शाखा वाला यह संसार अविनाशी पीपल की तरह है। वेदों के छन्द जिसके पत्ते हैं ऐसे रूप को जानने वाले को वेद के तात्पर्य को जानने वाला कहते हैं।

भावार्थः– यह संसार की रहस्यमयी उपमा है। पीपल के वृक्ष में जीवन शक्ति बढ़ाने की क्षमता होती है इसीलिए उसकी पूजा के बहाने उसका सानिध्य बताया जाता है। संसार जीवन लीलाओं का भंडार है अतः उसकी उपमा भगवान ने पीपल से दी। पेड़ का मस्तिष्क जड़ में होता है वही निर्धारित करती है कि कितना रस, कब कहाँ (फल, फूल, पत्ते, शाखा) में भेजना है। अतः ऊर्ध्व मूल कहा है। ज्ञान का विस्तार उसके पत्ते हैं। एक अन्य भेद के अनुसार शिष्य के मस्तिष्क में से शक्ति प्रवाहित करने से शीघ्र असर होता है। जो कुछ संसार में दृश्य है वो उल्टा है, असत्य है इसीलिए ऊर्ध्व मूल वाला कहा है। सत्य और सीधा प्रभु में मिलन मात्र है वो दृश्य नहीं है। अंतर महसूस करने का विषय है।

86

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ।।15।9।

अर्थः– यह जीवात्मा कान, आंख, स्पर्श, जीभ, नाक और मन को आश्रय करके विषयों का सेवन करता है।

भावार्थः– कान, आंख, स्पर्श, जीभ, नाक आदि इन्द्रियाँ सब जो देखती हैं स्वयं कार्य नहीं करतीं। बल्कि जीवात्मा मन के द्वारा इनको भोगता है।

87

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ।।15।15।

अर्थः– मैं ही सबके हृदय में अप्रगट रूप से स्थित हूँ तथा मुझसे ही स्मृति, ज्ञान और संशयनाश होता है। सब वेदों द्वारा मैं ही जानने योग्य हूँ। वेदान्त का कर्त्ता और वेदों को जानने वाला मैं ही हूँ।

भावार्थः– फिर से भगवान कह रहे हैं कि मैं ही अप्रगट रूप से (यानी अदृश्य होकर) सबके हृदयों में विराजमान हूँ। वे अपने को स्मृति, ज्ञान, वेदों का कर्त्ता, ज्ञाता और सब तरह के संशयों का नाश करने वाला कहते हैं। दूसरा कोई इन गुणों वाला हो ही नहीं सकता।

88

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ।।16।3।

अर्थः– हे अर्जुन! तेज, क्षमा, धैर्य, शारीरिक शुद्धि, शत्रुभाव का अभाव, अपने को पुजवाने की अनिच्छा, देवी सम्पदा के उत्पन्न होने के लक्षण हैं।

भावार्थः– यहां प्रभु दैवी सम्पदा वाले लक्षणों को बताते हैं। तेज आत्मिक तेज है, क्षमा, धैर्य और बाहरी शरीर की शुद्धि (आलस्य वाले नहीं रख सकते), नतमस्तक होना, अद्वेषी सब दैवी लक्षण हैं।

89

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ।।16।4।

अर्थः– हे पार्थ! दम्भ, घमण्ड और अभिमान, क्रोध, कठोरता और ये सब आसुरी सम्पदा को लेकर उत्पन्न हुये लक्षण हैं।

भावार्थः– मैं पन, घमण्ड और अभिमान (अहं) प्रभु को बहुत असह्य हैं। इसीलिए तीन शब्द इसी के लिए प्रयोग किये हैं तथा कठोरता, अज्ञानता आसुरी लक्षण हैं।

90

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ।।16।8।

अर्थः– आसुरी प्रवृत्ति वाले कहते हैं कि जगत आश्रय रहित है, असत्य है, बिना ईश्वर के है। परस्पर संयोग से उत्पन्न काम (के कारण) और इसके सिवा क्या है।

भावार्थः– यहां नास्तिकवादी, जगत को मिथ्या कहने वाले और संसार को काम रूप से उत्पन्न तक सीमित मानने वाले (जैसे पाश्चात्य संस्कृति वाले हैं) यह कहते हैं कि इन्हीं सब के अलावा जगत में कुछ भी नहीं है। ये ही खाओ, पियो ओर मौज करो से आगे कुछ सोचते ही नहीं। ये सब आसुरी प्रवृत्ति वाले हैं।

91

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारातः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम् ।।16।23।

अर्थः– जो शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण करता है वह न सिद्धि को प्राप्त होता है न परम गति को और न सुख को।

भावार्थः– यहां शास्त्रोक्त वचनों पर बहुत बल दिया है क्योंकि संसार और संसार के जीवों को सुचारू रूप से चलाये रखने का एक क्रम बना है। उसे ऋषियों ने शास्त्रबद्ध कर दिया है। जो उन सिद्धान्तों पर नहीं चलकर

मनमानी करते हैं वे विचलित विक्षिप्त, ध्येय रहित जैसे रहते हैं। उन्हें न सुख, न सिद्धि, न परम गति कुछ भी नहीं मिलते।

92

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः ।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ।।17।4।।

अर्थः– देवों को पूजने वाले सात्विक, यक्ष, राक्षसों को पूजने वाले राजसी तथा प्रेत भूतगणों को पूजने वाले मनुष्य तामसी हैं।

भावार्थः– देव अर्थात् देवता, ब्रह्म को पूजने वाले सात्विक पूजक हैं। यक्ष, किन्नर, राक्षस, गंधर्व, लोकपाल, दिकपाल आदि की पूजायें राजसी हैं और भूतात्मा, प्रेतात्मा, डाकिनी, पिशाचिनी आदि विधाओं वाली तामसी पूजायें हैं।

93

अफलाड्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ।।17।11।।

अर्थः– जो विधिपूर्वक (शास्त्रोक्त) इष्ट जानकर ही मन को समाधिपूर्वक लगाकर फल की इच्छा से रहित होकर कर्म करें तो वे सात्विक कर्म होंगे।

भावार्थः– फिर से भगवान विधि विधान पूर्वक शास्त्रोक्त तरीके पर बल देने के लिए कहते हैं कि निर्धारित विधि से मन को समाहित करके फल की इच्छा को त्यागकर किये हुये कर्म सात्विक कर्म हैं।

भगवान मूर्तियों या मंदिरें में नहीं है। भगवान हमारी अनुभूति में ही विराजमान है। हमारी आत्मा ही भगवान का मंदिर है। सभी के शरीर में आत्मा रूपी मंदिर में अनुभूति रुपी भगवान विराजित रहते हैं। बस इंसान इन्हें महसूस नहीं कर पाता और दुनियाभर में खोजता रहता है। जबकि भगवान हमारे अंदर ही मौजूद हैं। *आचार्य चाण्क्य*

प्रवचन गुरुदेवः डा.श्रीकृष्ण लालजी महाराज

मनुष्यों की तीन प्रवृत्तियाँ

मनुष्य तीन प्रवृत्ति के होते हैं। पहली प्रकार के ऐसे लोग होते हैं जिनका ध्यान शरीर पर अधिक होता है। खाना, पीना, सोना और विषय भोग कर लेना, इनका मुख्य ध्येय होता है। इन्हें न अच्छे–बुरे से कोई मतलब, न यह परमात्मा नाम की किसी चीज को जानते हैं। इनके सिद्धांत के मुताबिक मनुष्य शरीर मिला है वासनाओं की पूर्ति के लिए – खाओ, पियो और मौज उड़ाओ। ईश्वर चर्चा से यह दूर रहते हैं। अगर कभी इनसे ईश्वर के बारे में वार्ता भी की जाये तो उसको वो नहीं मानते, उसे ढोंग बताते हैं। कहते हैं कि ईश्वर कोई चीज नहीं है, किसने देखा है, इत्यादि। यह लोग सबसे निचली अवस्था के हैं। पशु योनी में गिने जाते हैं। इनके मन का अभी विकास नहीं हुआ है। सोचने–विचारने की शक्ति केवल जानवरों के दर्जे की ही है। इन पर ईश्वर चर्चा का कोई प्रभाव नहीं होता और न ही ये लोग उसके पात्र हैं। इसलिए इनके लिए शास्त्रों में कर्म करने का विधान है। कर्म करते–करते इनके मन का विकास होने लगेगा। उसके बाद इन्हें गुरु की आवश्यकता महसूस होगी।

दूसरी प्रवृत्ति के मनुष्य वे होते हैं जिनके मन का अच्छी तरह विकास हो चुका है। अच्छाई–बुराई को खूब समझते हैं। बुरी बात से बचना चाहते हैं और अच्छी बात अपनाना चाहते हैं। वे परमात्मा को मानते हैं और उससे डरते हैं। ऐसे लोगों की संख्या सबसे अधिक है। दुनियाँ में इसी श्रेणी के मनुष्य सबसे अधिक हैं और इनको ही आध्यात्मिक सहायता की जरूरत है ताकि वे आत्मा को बलवान बना कर उसे मन के बन्धन से आजाद करा सकें।

ऐसे लोग कुछ–न–कुछ पिछली कमाई किये होते हैं, सुःख और शान्ति के खोजी होते हैं। उनका जी तो चाहता है कि हम बुराई की बातों से बचें, अच्छे–अच्छे काम करें, परमात्मा की प्राप्ति हमें हो जाये जिससे हम हमेशा

की शान्ति पा जायें। लेकिन पिछले संस्कारों के वश वे ऐसे काम कर डालते हैं जिन्हें वे करना नहीं चाहते। ऐसा इसलिए होता है कि मन जन्म–जन्म से उस काम का आदी है और आत्मा इतनी कमजोर हो गयी है कि मन उस पर हावी हो जाता है। चाहते हैं अच्छा कर्म करना, हो जाता है बुरा। यह द्वन्द की अवस्था है। ऐसे लोगों को ही गुरु की आवश्यकता है। मनुष्य योनी बीच की योनी है। पशुओं से ऊँची और देवताओं से नीची। इसलिए इसमें भले–बुरे का ज्ञान होता है। यहाँ मन का प्रमुख स्थान होता है। मन तीन प्रकार का होता है – सात्त्विक मन, राजसी मन और तामसी मन। सात्त्विक मन –जो अच्छाई की तरफ ख़्याल रखे, बुराई का जहाँ नाम भी न हो –देवताओं की सी खसलत (स्वभाव)। राजसी मन – जो अच्छाई–बुराई दोनों में बरतें – इन्सान की सी खसलत (स्वभाव)। तामसी मन –जो हमेशा बुराई में ही बरते। क्या अच्छा है, क्या बुरा है, यह ख़्याल न हो –जानवरों की– सी खसलत (स्वभाव)।

इन्सानी खसलत वालों के लिये कर्म बन्धन नहीं है। ये प्रेम के भूखे हैं। ये मन के घाट पर अटके हुए हैं जो बीच का घाट है, कभी ऊपर को खिंच जाते हैं, कभी नीचे को। ऐसे ही लोग परमार्थ के सच्चे खोजी होते हैं और अगर वक्त के पूरे सद्गुरु इन्हें मिल जायें और पूर्ण समर्पण हो तो कल्याण हो जाता है।

दैवी प्रवृत्ति के वे लोग होते हैं जिन्होंने पिछले जन्म में ही सब कुछ कमाई कर ली है पर कोई ऐसा संस्कार या ख़्वाहिश मरते वक्त बाकी रह गयी थी जिसको पूरा करने या भोगने के लिये जन्म लेना पड़ा। इनके अन्दर बुराई का अंश नहीं होता। ये ख़ुद हमेशा अच्छाई ही अच्छाई में बरतते हैं और दूसरों को भी वैसा करने को कहते हैं। इनकी खसलत (स्वभाव) देवताओं की सी होती है। इन्हें करना–धरना कुछ नहीं पड़ता। जिस संस्कार के वश आये थे उसे भोग कर वापिस अपने धाम को चले जाते हैं। इन्हें ज़्यादा मदद की जरूरत नहीं होती। केवल नाम मात्र के लिये गुरु धारण किया करते हैं।

जिस तरह तीन प्रवृत्ति के मनुष्य होते हैं उसी तरह गुरु की भी तीन श्रेणियां हैं – (१) गुरु (२) सद्गुरु, और (३) परमगुरु, यानी जिस्मानी, ख़्याली और रूहानी।

जो लोग निचली अवस्था के हैं, जिनका बाहरी रूप (यानी माद्दा पर) ध्यान ज़्यादा है, मन का विकास अभी पूरा नहीं हो पाया, गुरु का शरीर ही उनका गुरु है। जो लोग इससे ऊँची अवस्था प्राप्त कर चुके हैं, मन पूरी तरह विकसित हो चुका है, गुरु का ख़्याल ही उनका गुरु है। दूसरे शब्दों में यों समझ लीजिये कि ध्यान करते वक्त गुरु का शरीर उनके ध्यान में नहीं आता बल्कि गुरु का ख़्याल ही उनके सामने होता है। उनके अन्दर शब्द जारी हो जाता है और प्रकाश दिखाई देने लगता है। यही सद्गुरु हैं।

परमगुरु परमात्मा को कहते हैं जो सबका गुरु है। देहधारी गुरु का सहारा लेकर सद्गुरु यानी शब्द और प्रकाश तक पहुँचते हैं। शब्द और प्रकाश का सहारा लेकर साधक में प्रेम पैदा हो जाता है। उसके बाद परमगुरु यानी परमात्मा के देश में पहुँच जाते हैं, यानी ऊँ का ख़्याल आने लगता है और चारों गतियों (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य) से गुजर कर उससे मिलकर एक हो जाते हैं। इन्हीं जीवन मुक्त आत्माओं को आध्यात्मिक गुरु (रूहानी गुरु) कहते हैं। इनके अन्दर सिवाय परमात्मा के प्रेम के और कोई ख़्वाहिश नहीं होती। सब ख्वाहिशें चाहे वे इंद्रिय, मन, बुद्धि के मुताल्लिक हों, जलकर ख़त्म हो जाती है। यही गुरु कहलाने के लायक हैं। इनकी सोहबत में बैठने, इनके वचन सुनने, इनका ख़्याल करने से आहिस्ता–आहिस्ता मन–बुद्धि के पर्दे कट जाते हैं। आत्मा अपने असली रूप में जाहिर होती है, परमात्मा का प्रेम दिन पर दिन बढ़ने लगता है और जिज्ञासु एक दिन अपने प्रीतम से मिलकर एक हो जाता है।

''पारस लोहा कंचन करत
गुरु करें आप समान।''

परमसंत डा.श्रीकृष्ण लाल जी महाराज के अनमोल वचन

उपदेश

❖ Cooperate with mother प्रकृति माँ के अनुकूल रहो। यह दुनिया और इसके सामान पुत्रादि, स्त्री, कुटुम्बी, दोस्त अहबाब, सब प्रकृति माँ के रूप हैं। उनसे मिलकर चलो, लेकिन अपने को अलहदा समझो। कोई हमेशा नहीं रहेगा। लड़का पैदा हुआ है, मरेगा जरूर। फिर उससे मोह क्या? इस तरह विवेक से बन्धन ढीले करते चलो। अपने कर्त्तव्य पूरे करो और अन्दर से सबसे अलग रहो। परमपिता परमेश्वर को ही अपना समझो और उसी से प्रेम करो। सब प्राणीमात्र की सेवा करो। जो काम भी दुनियाँ का करो अपने आनन्द के लिए मत करो बल्कि ईश्वर का समझ कर उसको खुश करने के लिए करो। यही attachment (लगाव) है, यही भोग है। उसको dutysake (कर्तव्य समझकर) करो। यही प्रकृति माँ के साथ मिलकर चलना है।

❖❖❖❖❖

❖ अगले जन्म की बात क्यों सोचते हो? जो कुछ करना है वह इस जन्म में ही कर लो। आगे न जाने कौन सा जन्म हो। अगले जन्म में ख़वास (स्वभाव) के मुताबिक़ जानवर या पत्थर भी बन सकते हो और देवताओं की योनि भी प्राप्त हो सकती है। यह सब भोग योनियाँ हैं। कर्म केवल मनुष्य चोले में ही बन सकता है, यानी मनुष्य चोला ही एक ऐसा चोला है जिसमें परमात्मा की प्राप्ति की जा सकती है। यह बार-बार नहीं मिलता। जो कुछ यत्न करना है, इसी में करो। सब बातों से ध्यान हटाकर ऐसी बात में लगाओ जिससे परमार्थ कर रास्ता खुले। एक बार रास्ते पर

पड़ जाओगे तो वह कमाई बेकार नहीं जायेगी। आवरण हटाये जा सकते हैं। हीरा मिट्टी में दब जाये तो उसका कुछ बिगड़ता नहीं। मिट्टी हटा दो, फिर हीरे की चमक वैसी की वैसी ही रहेगी।

❖❖❖❖❖

❖ भोगने की बनिस्बत भोगने की इच्छा ज़्यादा नुकसान करती है।

❖❖❖❖❖

❖ जो भी सत्संगी सत्संग में आकर संसार और उनके भोग विलासों की बातें करते हैं, वे अभागे हैं। क्या उन्हें इस काम के लिए अपने घर में फ़ुरसत नहीं मिलती? अपना रास्ता खोटा करते हैं और दूसरों के लिए रोड़ा बनते हैं। परन्तु ऐसे लोगों से अधिक अभागे वे हैं जो सत्संग में आकर उनकी बातें चित्त देकर सुनते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों पर रहम करे।

❖❖❖❖❖

❖ कभी किसी की बुराई न करें। जब–जब बुराई का ख़्याल मन में आवे तब–तब यह सोचे कि अगर तुम्हारे लिए भी कोई इस तरह करे तो तुम्हें कैसा लगेगा इससे यह ख़्याल टूट जाता है।

❖❖❖❖❖

❖ जहाँ तक हो सके, अपने सत्संगी भाइयों की या अन्य परमार्थियों की मदद करो, और जो ऐसा न कर सको तो उनका किसी तरह परमार्थी नुकसान करने की इच्छा मत करो। इन बातों पर चलने से हर सत्संगी की तरक्की होगी, सत्गुरु ख़ुश होकर उसे प्रेम दान देंगे जो संसार सागर से पार कर देगा।

❖❖❖❖❖

❖ संसार और परमार्थ, दुनिया और दीन, दोनों नहीं मिल सकते। एक को दूसरे पर कुर्बान (बलिदान) करना पड़ेगा। अगर दीन

(परमार्थ) चाहते हो तो दुनिया तोड़नी पड़ेगी। जिसमें सच्ची और पक्की भक्ति होगी वही मालिक के दरबार में पहुँचेगा। ढोंगी और कपटी के लिए मालिक के दरबार में कोई जगह नहीं है।

❖❖❖❖❖

❖ यह दुनिया धोखा दे रही है। दिखाई कुछ दे रहा है, असलियत कुछ और है। जो असल है वह सिर्फ़ ईश्वर है। उसे पाने की कोशिश करो। जहाँ आपस में मुहब्बत से रह रहे हो वहीं सतयुग है। जहाँ एक दूसरे से भिन्नता रखते हो वहीं कलियुग है। ईश्वरीय जीवन वहाँ है जहाँ सब के साथ सहयोग करते हो।

❖❖❖❖❖

❖ दुःख बर्दाश्त करने के चार उपाय हैंः–

❖ मजबूरी से दुःख बर्दाश्त करना। यह राजी–ब–रज़ा (यथा–लाभ–सन्तोष) नहीं है।

❖ दुःख को प्रभु की कृपा समझकर बर्दाश्त करना।

❖ दुःख आवे तो अपने आपको सराहे और सोचे कि 'हे प्रभु! तेरी बड़ी कृपा है। न मालूम कितनी बड़ी मुसीबत थी जो तूने इतने थोड़े में ही काट दी। न मालूम सूली पर ही चढ़ना पड़ता जो काँटा ही छिद कर रह गया।

❖ दुःख आवे तो सोचे कि यह मेरे प्रियमत या माशूक़ की तरफ से है और उसमें ख़ुश रहे।

❖❖❖❖❖

❖ असली जिज्ञासु वह है जो सन्त को परमात्मा के प्रेम के लिए प्रेम करे और सच्चा सन्त वह है जो उसे परमात्मा का प्रेम दे सके।

❖❖❖❖❖

❖ गुरु की जहाँ और पहिचानें हैं वहाँ एक यह भी पहिचान है कि वह सच्चे जिज्ञासु की तलाश में रहता है और इस प्रकार अपने गुरु का ऋण उतारना चाहता है। उसको दुनिया की चाह नहीं होती। जो कुछ न चाहता हो, जिस के पास बैठने से इश्वर–प्रेम बढ़े, दुनिया की वासनायें कम हों, आन्तरिक अभ्यास करता हो, जो अपनी गाढ़ी कमाई की चीज़ (ईश्वर का प्रेम) बिना स्वार्थ दे दे, जो सिद्धियों को दिखा कर लुभाता न हो और जो एक दिन में ही परमात्मा का दर्शन कराने का ठेका न ले, वही सच्चा सन्त है।

❖❖❖❖❖

❖ किसी वस्तु को देखकर या उसका ध्यान करके उसकी ओर खिंचावट (attraction) होना 'लोभ' है। फिर उस वस्तु से लगाव होना 'मोह' है। बाद में उसे प्यार करना, अपने को उसका स्वामी समझना यह 'अहंकार' है। जब मनुष्य इसमें फँस जाता है तो छुटकारा कठिनाई से होता है। अधिकतर यहीं अटके रहते हैं।

❖ असफलता की बात भूल जाओ। देखो, जब एम. ए. पास करना हो तो पहली कक्षा से पढ़ना आरम्भ करते हो और उससे ऊपर की कक्षायें पास करते–करते एम. ए. पास करने में कई साल लग जाते हैं। जब संसार की विद्या प्राप्त करने में कई साल लग जाते हैं तो ब्रह्म विद्या, जो आध्यात्मिक विद्या है उसे प्राप्त करने में जल्दी कैसे हो सकती है? कोई बिरला संस्कारी होता है जो इसे एक ही जन्म में प्राप्त कर लेता है वरना पाँच जन्म या कम से कम तीन जन्म तो ज़रूर ही लग जाते हैं।

❖ किसी स्त्री के मुँह की ओर मत देखो, पैरों की ओर देखो।

प्रवचन परमसंत डॉ.करतार सिंहजी साहब

तू साहिब मैं बन्दा तेरा.....

हमें अपने कर्तव्य के प्रति सदैव सजग रहकर सोचते रहना चाहिये। ईश्वर की याद निरन्तर बनी रहे, एक क्षण भर भी ईश्वर से पृथक नहीं होना चाहिये। महापुरुष कहते हैं **''आँखा जीवा, बिसरे मर जावा।''** यानी स्मृति मेरा जीवन है तथा विस्मृति मेरी मृत्यु है। **''तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूँ'' आपा फिरका मिट गया, जित देखां तत तू।''** इस स्मृति का, इस याद का, इस साधना का परिणाम क्या है? उसको (परमात्मा को) निरन्तर याद करें, उसके स्वरूप को, उसके गुणों को याद करें। उसकी जो कृपा हम पर बरस रही है, आनन्द की वृष्टि हो रही है, उसका स्मरण करें। यही हमारे जीवन का लक्ष्य है।

आप परमात्मा के अंश हैं। परन्तु हम भूले हुए हैं। इस भूल से हमें मुक्ति प्राप्त करनी है तथा साधना करते हुए, उसको याद करते हुए, ''तू-तू'' करते हुए, हमें वही बनना है जो परमपिता परमात्मा है। वह आपका सहज स्वरूप ही है, परन्तु हम भूले हुए हैं। हमारा वास्तविक रूप है कि हम परमपिता परमात्मा के अंश हैं, परमात्मा ही हैं। ''तत्वम असि'' तुम तो वो ही हो। क्यों भूले हुए हो कि तुम ब्रह्म हो, परमात्मा हो? इस भूल को मिटाना है। परन्तु यह भूल कहां है? हम माया में, संसार के आकर्षण में फँस गये हैं।

हमारा शरीर भी फँसा है, मन और बुद्धि भी फँसे हैं। हमारा पूर्ण अस्तित्व आत्ममय होते हुए भी अनात्मिकता में जीवन व्यतीत करता है। इस कारण हम दुःखी हैं। सत्संग में आकर हमें अपने आप को पहिचानना है। अपने कर्तव्य को देखना है। इस शरीर को छोड़ने से पहले हमें अपनी पहचान करनी है। इसके लिए साधना की आवश्यकता है।

साधना में हम आँख बंद करके, जो तरीका हमें बताया गया है उसके अनुसार अभ्यास करते हैं, ठीक है, शुभ है। परन्तु हमें साधना के साथ-साथ अपने जीवन में भी सुधार लाना है। हमारा अंतःकरण

हमारे पापों, हमारे कुकर्मों के कारण अत्यन्त मलीन हो चुका है। इसको धोना है, गँगा स्नान करना है, बाहर का नहीं भीतर का स्नान करना है।

हमारी संस्कृति के महान मार्गदर्शक भगवान कृष्ण ने गीता के 12 वें अध्याय में 13 वें से लेकर 23 वें श्लोकों में सच्चे भक्त के गुणों का वर्णन किया है। मैं बारम्बार आपसे निवेदन किया करता हूँ कि हमें स्वनिरीक्षण करके अपने दोषों, अपनी कमियों को सच्चाई के साथ देखना चाहिये। संसार के साथ हम बेशक झूठ बोलते हैं, बोलते रहेंगे, उसका विशेष महत्व नहीं है। परन्तु हम तो स्वयं अपने साथ भी झूठ बोलते हैं? हम स्वनिरीक्षण कर, सत्यता के साथ, अपने आपको देखें कि मेरे भीतर में कौन सी कमियाँ हैं। कोई तीसरा आदमी नहीं देख सकता। गुरु महाराज फरमाया करते थे कि अपने अवगुणों को देखिये, प्रभु–चरणों में बैठकर रोइये, उन प्रेम अश्रुओं से जो गंगा–स्नान होगा उसके द्वारा आपके दोषों की निवृति होगी।

गुणों का पहला श्लोक है अद्वेष्ठ मैत्री। संसार में जितने भी लोग हैं– मनुष्य, पशु, वनस्पति, पत्ते – सबके साथ मैत्री। किसी के साथ भी द्वेष भाव नहीं रखना। चाहे कोई व्यक्ति आपको कितना भी प्रकोप दे, आपके मन में उसके प्रति द्वेष न हो। शेख फरीद जी कहते हैं कि जो तुम्हारे साथ अत्याचार करे, मार–पीट करे, तुम उसके घर जाओ और उसके पाँव दबाओ। क्या हम ऐसा कर सकते हैं? द्वेष भावना खत्म करने के लिए हमें बड़ी तपस्या करनी पड़ेगी। हम मित्रों के साथ प्रेम कर सकते हैं, परन्तु शत्रु के साथ मित्रता करना बड़ा कठिन है। हमारे मन से एक क्षण क्या, पूरे जीवन भर द्वेष नहीं निकलता। हम तो सांसारिक व्यक्ति हैं, मेरा बड़ा अनुभव है कि अच्छे–अच्छे योगियों के मन से भी द्वेष भावना नहीं निकलती। हृदय में जब तक निर्मलता, स्वच्छता, कोमलता नहीं आयेगी, ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस हृदय में तो ईश्वर को रहना है। मलिन हृदय में ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

हजरत ईसा भी यही कहते हैं। क्षमा करो, क्षमा करो। अपने मित्रों को, पति अपनी पत्नि को, पत्नि अपने पति को, बाप बेटे को क्षमा करें।

यही नहीं जो तुम्हें दुःख दें, उत्तेजना दें, तुमसे शत्रुता करें, उनको क्षमा कर दो, उनसे प्रेम करो, उनकी सेवा करो। Love thy neighbour- अपना चित्त निर्मल रखो। forgiveness, love, service.

"ना कोई बैरी, ना ही बेगाना, सगल संग हमको बन आई"

हमारा कोई दुश्मन है ही नहीं। सारा विश्व ईश्वर–रूप है। जब हम किसी की सेवा करते हैं, किसी से प्रेम से बोलते हैं तो हम ईश्वर की सेवा करते हैं, ईश्वर से बोलते हैं। सारा संसार ही हमारा मित्र है। हमने देखा है कि ईश्वर का प्रेम उत्पन्न होने पर लोग जाकर वृक्षों का आलिंगन कर लेते हैं। हमारे देश में मूर्ति पूजा होती है। कौन कर सकता है पत्थर में भगवान के दर्शन? हम कहते हैं भगवान सर्वव्यापक हैं, तो पत्थर में भगवान क्यों नहीं हो सकते? नामदेव जी पत्थर की मूर्ति को दूध पिला सकते हैं। धन्ना भक्त को सालिगराम जी में भगवान के दर्शन होते थे। ये किस्से कहानियां नहीं हैं। किस्से कहानियाँ इसलिए मालुम होते हैं क्योंकि हमारा हृदय पत्थर है, इसमें कोमलता है ही नहीं, भगवान के प्रति मित्रता है ही नहीं। हमारे यहाँ पीपल, बड़, तुलसी जी की पूजा होती है। वो हृदय कितने कोमल हैं जो वनस्पति की भी पूजा करते हैं। ऐसे लोगों से हमें प्रेरणा मिलती है।

अहंकार हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है, सबसे बड़ा रोग है। कोई व्यक्ति नहीं जिसमें अहंकार न हो। किसी में किसी प्रकार का अहंकार है, किसी में किसी प्रकार का अहंकार है। सच्ची दीनता किसी में है ही नहीं। प्रभु को दीनता अति प्रिय है। ये अहंकार छोटे–मोटे व्यक्ति तो क्या, बड़े–बड़े व्यक्ति को भी अपना शिकार बना लेता है।

हम हामी भरते हैं कि मैं ये हूँ, मेरा शरीर बलवान है, मैं सत्संगी हूँ। बहुत सारे लोग सत्संग का भी प्रचार करते हैं। मैं सत्संगी हूँ, ऐसा हमारे यहाँ बोला नहीं जाता। मौन साधन होता है, शब्दों का प्रयोग नहीं होता। हमारे व्यवहार से भले ही कोई समझ ले कि हम सत्संगी हैं, परन्तु हम प्रचार नहीं करते।

हमारे यहाँ जो साधना है, जो रहने–सहने का तरीका है इसको मलामते कहते हैं। हमारे पूर्वज अपने आप पर कोई दोष लगा लेते थे ताकि लोग आकर्षित न हों, हमसे दूर रहें।

एक और गुण बतलाया है – सम दुःख–सुःख। हम संसार में रहते हैं। संसार में रहने पर दुःख भी आयेगा, सुःख भी आयेगा। हम सुःख में भी विचलित हो जाते हैं, दुःख में भी विचलित हो जाते हैं। जो व्यक्ति विचलित हो जाता है, उसके भीतर में स्थिरता नहीं रहती। उसको कभी भी साधना का लाभ नहीं हो सकता। सांसारिक यातना तो मिलेगी। हमारे जीवन का लक्ष्य है – परमात्मा की प्राप्ति। भगवान कहते हैं कि मेरे प्रेमी सुःख–दुःख दोनों ही अवस्थाओं में सम अवस्था में रहें। सच्चे जिज्ञासुओं की स्थिति समता की है। दुःख का कितना बड़ा तूफान आ जाए, सुःख की कितनी ही वृष्टि हो जाए, सच्चा साधक सदा सम रहेगा।

महापुरुष भी कहते हैं कि बिना गुणों के भक्ति नहीं हो सकती। **"बिन गुण कीते भक्ति न होय।"** ये रास्ता बड़ा कठिन है। अग्नि के ऊपर चलने का है। और कुछ नहीं तो हमारे सत्संग में जो हमारे सत्संगी भाई–बहिन हैं उनके साथ तो हमारा प्रेम बढ़े। हम क्यों एक दूसरे के दोष देखते हैं? जब हम किसी के दोष देखते हैं तो उस व्यक्ति को पीड़ा होती है कि फलां व्यक्ति मेरे में दोष देखता है। लेकिन उसको भी उचित होगा कि वह मनन करे कि मेरे में कौन से अवगुण हैं और उन अवगुणों से दूर होने की चेष्टा करे। उसको तो ऐसा करना चाहिये। परन्तु हमारे लिए और भी अनुचित है कि हम कौओं की तरह दूसरे के अवगुण देखें। आप मेरे सच्चे मित्र तभी होंगे जब आप मुझे बतायेंगे कि मेरे में ये दोष हैं। मेरी सच्ची साधना यह होगी कि आप मेरे जो दोष बतायेंगे, उन्हें मैं दूर करने का प्रयास करूँगा, ये मेरी साधना है।

आप यहाँ (भण्डारे में) आये हैं, स्वनिरीक्षण करते हुए अपने मोह को त्यागने की कोशिश करें तथा सद्गुणों को अपनाने का अभ्यास करें। सत्संग के बाद जितना समय आपको मिले, बातें मत करें और खास तौर पर बुरी बात तो बिलकुल मत करिये। जितना समय आपको मिलता है, ईश्वर की याद में रहिए, नाम लेते रहिए। बेशक आपकी आँखें खुली रहें, जरूरी नहीं कि आँखें बंद करके करें। ईश्वर की उपस्थिति का भान बना रहे। ईश्वर की कृपा बरस रही है। इस कृपा–वृष्टि का भान सदा बना रहे। अन्दर से भगवान का जो नाम आप लेते हैं, लेते रहिये।

लगातार प्रवाह चलता रहे। भण्डारे में आने का मतलब यही है कि एक क्षण की भी विस्मृति न हो। **"आँखा जीवां बिसरे मर जावां"**। स्मृति मेरा जीवन है, विस्मृति मेरी मृत्यु है। स्मृति का मतलब है कि मेरा सम्बन्ध मेरे इष्ट देवता के साथ, मेरे परमात्मा से जुड़ा है। इसीलिये मैं बार-बार निवेदन कर रहा हूँ कि जो वृष्टि हम पर हो रही है उसका अनुभव आप खाते-पीते, बोलते-चालते, सोते-जागते, चलते-फिरते प्रतिक्षण करते रहिए। उस कृपा-वृष्टि से वंचित न हों। शुक्र है, शुक्र है, शुक्र है।

ऊँ राम, ऊँ राम, ऊँ राम बड़ी दीनता के साथ, मधुरता के साथ, सरलता के साथ, ईश्वर को याद करें। यही गंगा स्नान है, यही भण्डारे का लाभ है। वो जीव भाग्यशाली हैं जिनको यह मनुष्य चोला, ये शरीर मिलता है। किन्तु हम लोग इस शरीर की प्राप्ति के लिए, परमात्मा की ओर से इस पवित्र उपहार के लिए, कृतज्ञ नहीं होते और इस का सद्उपयोग नहीं करते। शरीर के साथ इंद्रियाँ भी होती हैं। शरीर तो मिला है कि हम साधना करें। अपनी आत्मा को परमात्मा में विलय कर दें ताकि जन्म-मरण के चक्कर से हमेशा-हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाये। परन्तु मनुष्य इन इंद्रियों के भोगों में फँस जाता है और अपने जीवन के लक्ष्य, अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति, को भूल जाता है। कोई जिव्हा के रस में फँसा है, कोई आँख के दृश्यों में फँसा है, कोई अपने कानों से निन्दा-स्तुति सुनता है। ये मुख्य इंद्रियाँ हैं। बाकी इंद्रियाँ भी फंसाने वाली हैं। हम सब इन्द्रियों के सुख में, शरीर के आराम और सुख में फँसे हुए हैं।

हम इन इंद्रियों में इतने फँस गये हैं कि हम अपने कर्तव्य को जो हम ईश्वर से कह कर आए थे कि जिस वक्त हमें मनुष्य चोला मिल जायेगा तो हम निर्मल होकर, गँगा स्नान कर, सद्गुणों को अपना कर, घोर तपस्या कर, अपनी आत्मा को परमात्मा के चरणों में विलय कर देंगे, भूल गये हैं। हम अज्ञान रूपी माया में फँस जाते हैं और अपने लक्ष्य को भूल जाते हैं। यह किसी एक व्यक्ति का दोष नहीं, हम सबका दोष है।

आप सब भाग्यवान हैं कि आपको मनुष्य चोला मिला है। इसी चोले में आप अपने आप को पहिचान सकते हैं। Know thyself- महर्षि रमण कहते हैं अपने आप को जानो कि आप कौन हैं। शरीर हैं, प्राण हैं, मन, बुद्धि, आनन्द हैं या क्या हैं ?

यह संसार परीक्षा–क्षेत्र है। हम अज्ञान में या माया में इतने अधिक फँसे हुए हैं कि अपने कर्त्तव्य के प्रति ही सोये हुए हैं। आप अपने सारे दिन का जीवन देखिए कि क्या है? बोलते हैं तो जुबान का रस लेते हैं, खाते हैं तो जुबान का रस लेते हैं। किसी की बुराई देखकर उसकी निन्दा करते हैं। कानों से बुराई सुनते हैं। आँखों से बुरी–भली चीजें देखते हैं। नाक से सुगंधि आदि लेते हैं। शरीर के स्पर्श से आनन्द महसूस करते हैं। हम सब इन इंद्रियों के सुख–दुःख में फँसे हुए अपना पवित्र–कीमती समय खो देते हैं। बड़े–बड़े ऋषि–मुनि, देवता, गुरु आते हैं, हमें चेतावनी देते हैं। हमें अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत होना चाहिये।

महात्मा गाँधी के आश्रम में सुबह यह भजन पढ़ा जाता था– ''उठ जाग मुसाफिर भोर भई .....'' यानी जीवन में भोर 'सुबह' हुई है, बड़े भाग्य हैं। उठकर भगवान का नाम लो। कहाँ सो रहे हो बिस्तर में। महापुरुष हमें चेतावनी देते हैं। लेकिन जब सूर्य उदय होने का समय होता है, या उससे पहले, उसी वक्त व्यक्ति को प्रमाद आता है। थोड़ा और सो लें। प्रमाद जीव का स्वभाव है। सूर्य उदय हो जाता है। धूप निकल आती है। दफ्तर का समय हो जाता है। परमात्मा कहां है? पता नहीं। इन्हीं बातों में मनुष्य फंसा रहता है। जो उसका कर्त्तव्य है, उसका धर्म है उसे भूल जाता है। जागते हुए भी मनुष्य सोता रहता है।

यही बात मैं आज सुबह से आपकी सेवा में निवेदन करता आ रहा हूँ। हम अपनी प्रगाढ़–निद्रा से जागें, अपने लक्ष्य के प्रति जागरूक हों। महापुरुष कहते हैं कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने जीवन की बाजी लगा देनी चाहिये। ध्रुव को जब उसके जगत–पिता ने अपनी गोद में नहीं बैठाया तो वह अपनी तपस्या के बल से अपने सच्चे पिता की गोद में जा बैठा और ध्रुव तारे के रूप में आज भी आकाश में प्रकाशित है। जो भी व्यक्ति अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक हो वह ध्रुव–सफलता प्राप्त कर सकता है। हममें पुरुषार्थ की कमी है। अपने कर्त्तव्य के

प्रति हमारी जो प्रगाढ़ निद्रा है, उसके प्रति हमें जागरूक होना चाहिये। भगवान के जो शब्द आज सुने हैं, उन पर मनन करें, निध्यासन करें। ये मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता। हजारों-लाखों वर्ष लगते हैं इस मनुष्य चोले को पुनः प्राप्त करने में। ईश्वर का शांति पाठ किया, पवित्र उपदेश सुना.. तो सत्संग में आने का लाभ तभी होगा जब हम इन बातों को ध्यान से सुनकर इन पर मनन करेंगे और इस उपदेश को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे।

ईश्वर आपको शक्ति प्रदान करें।

जैसा बीज बोएंगे, वैसा फल मिलेगा

एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। एक ने व्यापार बढ़ाते-बढ़ाते बहुत उन्नति की, जबकि दूसरे को घाटा हो गया, तथा दो समय का भोजन जुटाने में भी उसे कठिनाई आने लगी। एक दिन वह अपनी पत्नी के साथ गंगा तट स्थित एक संत के आश्रम में पहुंचा। वहां संत जी को प्रणाम करने के बाद उसने दुखी होकर कहा, महाराज, मैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि ईश्वर कल्पना है। और यदि वह है, तो पक्षपाती है, किसी को सुख देता है, तो किसी को अपार दुख।

संत ने धैर्य से उसके शब्द सुने। कुछ देर बाद वह उसे अपने बगीचे में ले गए। वहाँ एक खेत के कोने में गन्ना बोया हुआ था, और दूसरे कोने में चिरायता। एक ओर चमेली के फूल सुगंध बिखेर रहे थे, तो दूसरे कोने में गुलाब के पौधों पर फूलों के साथ कांटे नजर आ रहे थे। संत ने उसे समझाया, भैया, एक ही जमीन पर एक ओर मीठा गन्ना है, तो दूसरी और कड़वा चिरायता। इसी तरह चमेली का कोमल पौधा सुगंध बिखेर रहा है, तो गुलाब के कांटे हमें भयभीत कर रहें हैं। इस भिन्नता के लिए इसे पैदा करने वाली जमीन दोषी नहीं है, बल्कि जैसा बीज बोया गया है, वैसा ही फल मिला है। सुख-दुख के लिए परमात्मा नहीं हमारे कर्म व संस्कार जिम्मेदार हैं।

संत के वचन सुनकर उसका हृदय ईश्वर के लिए पुनः श्रद्धानत हो उठा, और उसने कठोर परिश्रम कर फिर से सफलता प्राप्त कर ली।

प्राचीन मुस्लिम संतों के जीवन चरित्र

हुसैन बसराई

तपस्वी हुसैन बसराई का जन्म तेरह सौ वर्ष से भी पहले मदीना शहर में हुआ था। इस्लाम के महात्माओं में वे अग्रगण्य थे। उनका जीवन अनेक कठोर साधनाओं, पश्चात्ताप और कष्ट सहन से भरपूर था। इस तपस्वी की माता हजरत मुहम्मद साहब की पत्नी आयशा की दासी थीं। माता जब आयशा की खिदमत तथा घर के दूसरे काम–धंधों में लगी होती, उस समय हुसैन भूख से रोते रहते। दयालु आयशा यह देखकर उन्हें अपनी गोद में लेकर अपना स्तनपान कराने लगतीं। उनके स्तन में दूध तो था नहीं, बालक के बहुत अधिक चूसने पर एक दो बूँद दूध निकलता। जन्म के बाद शीघ्र ही बालक को हजरत मुहम्मद साहब के प्रचारक महात्मा उमर के पास दर्शन के लिए ले गये थे। बालक को देखकर उमर ने कहा था– ''बालक का चेहरा बहुत ही हुसैन (सुन्दर) है। इसी से उनका नाम हुसैन पड़ा।

उन्होंने एक सौ तीस साधु–संतों का सत्संग किया था। हजरत मुहम्मद साहब के दौहिय हुसेन के साथ उनकी गहरी दोस्ती थी। उन्हीं के साथ हुसैन ने विद्यारम्भ किया था और उनके पिता हजरत अली के पास उन्होंने फकीरी ली थी। महात्मा हुसैन के जीवन का रुख बदलने की घटना इस प्रकार हैः–

कहा जाता है कि हुसैन एक जौहरी थे। एक दिन सौदागरी के लिए वे रोम शहर में गये और वहाँ के मंत्री से मिले। मंत्री से उनकी बहुत अच्छी जान पहचान थी। मंत्री के आग्रह पर वे उनके साथ घोड़े पर सवार होकर शहर के बाहर जंगल में गये। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि मणि–मुक्ताओं की झालरों से सजा हुआ रेशमी कपड़े का एक मण्डप बना हुआ है। मण्डप के आगे सजा सजाया लश्कर चारों ओर घूमकर प्रदक्षिणा दे रहा था। प्रदक्षिणा पूरी होने पर लश्कर रोमन भाषा में कुछ बोलकर एक ओर चला गया। उसके बाद साफ–सुथरे कपड़े पहने बुद्धों का एक समुदाय आया।

उन्होंने भी वैसा ही किया। फिर चार सौ पण्डित आये, वे भी मण्डप की प्रदक्षिणा करके कुछ बोलकर चले गये। उनके बाद आईं मणि–मुक्ताओं के थाल हाथ में लिए रूप–लावण्यवती दो सौ युवतियाँ। वे भी वैसा ही करके लौट गईं। अन्त में वहाँ के सम्राट ने प्रधान सचिव के साथ मण्डप में प्रवेश किया और थोड़ी देर बाद वह भी बाहर चला गया।

हुसैन यह दृश्य देखकर बहुत चकित हुये, इस घटना के मर्म को वे बिल्कुल न समझे। मौका पाकर उन्होंने इसका मतलब अपने दोस्त मंत्री से पूछा तो उसने बताया– ''हमारे सम्राट के एक बहुत सुन्दर और गुणवान पुत्र था। वे उसे बहुत ही प्यार करते थे। अकस्मात् उस राजकुमार की मृत्यु हो जाने से सम्राट बहुत ही दुःखी हुए। उस मण्डप में कुमार की कब्र है। प्रत्येक वर्ष राजकुमार की मृत्यु तिथि के दिन सम्राट अपनी सेना और कुटुम्बियों के साथ वहाँ जाते हैं। उसी दिन की ही क्रिया तुमने देखी थी। सैनिकों ने हमारी भाषा में कहा था– 'हे राजकुमार! यदि मेरे और मेरी सेना में बल होता तो हम सब अपने प्राण देकर भी तुम्हें लौटा लिए होते, किन्तु तुम्हें जो काल रूपी शत्रु उठा ले गया है उस पर हमारा कोई वश नहीं चलता। हमारा वश चलता तो हम संग्राम छोड़कर तुम्हें लौटा लाते। परन्तु हाय! दुःख है कि हम निरुपाय हैं।' उसके बाद उन वृद्धों ने कहा कि 'हे राजकुमार! यदि हम शोक प्रकाशित करके अथवा अपने आशीर्वाद के बल से तुम्हारे जीवन की रक्षा करने में समर्थ होते तो क्या ऐसा करने से कभी चूकते ?' विद्वानों की उस मण्डली ने कहा 'हे कुमार! ज्ञान से, विज्ञान से अथवा पाण्डित्य के बल से यह दुःख दूर हो सकता तो हम अवश्य कर लेते, किन्तु मृत्यु के आगे हम लाचार हैं।' प्रदक्षिणा के बाद उन सुन्दरियों ने कहा था– 'हे अन्नदाता! यदि धन सम्पत्ति और रूप लावण्य के बल से तुम्हें वापस पा सकती तो हम उन सबकी बलि दे देती, किन्तु जीवन–मरण का संचालन करने वाली उस शक्ति के आगे इस धन–सम्पत्ति और रूप–यौवन की कोई बिसात नहीं।' और अन्त में स्वयं सम्राट ने कहा– 'हे प्राणप्रिय पुत्र! तेरे पिता के हाथ में अब कौन सी शक्ति है ? मैं तेरे लिए बड़ी भारी

फौज लाया, अनेक विद्वानों और वृद्धों को लाया, सम्पत्ति सहित सुन्दरियों को लाया और प्रधान सचिव के साथ मैं खुद आया। सैन्यबल, पाण्डित्य, धन–सम्पत्ति और सौन्दर्यबल से यह संकट दूर हो सकता तो उन सबका बल एकत्र करके मैं वैसा करता, परन्तु जो हो गया है उसे मिटाने की क्षमता तो तेरे इस पिता क्या सारे संसार के असंख्य हाथों की सम्मिलित शक्ति के सामर्थ्य के भी बाहर है।' इतना कहकर सम्राट भी लौट गये। प्रतिवर्ष यही क्रिया हुआ करती थी।''

मंत्री की इस बात ने हुसैन के दिल में वैराग्य और पश्चाताप पैदा कर दिया। उनका हृदय अस्थिर हो गया। अपने रोजगार को वहीं छोड़कर वे उदास भाव से बसरा लौट आये। वैराग्य और पश्चाताप की उस अग्नि से व्यथित होकर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक काम क्रोधादि विकारों का नाश न हो जायेगा वे इस संसार में न हँसेंगे, न मौज–शौक करेंगे। उसी समय से वे प्रभु–भक्ति और ध्यान स्मरण में लवलीन रहने लगे। लोगों का साथ छोड़कर एकान्त में रह कर उन्होंने बहुत समय बिताया। बाद में सात दिन में एक बार वे लोगों को उपदेश देने लगे। तपस्विन राबिया भी उसी शहर में रहती थी। हुसैन राबिया के आ जाने पर ही अपना उपदेश आरम्भ करते। राबिया की उपस्थिति से वे उत्साहित होते और जन समूह की अपेक्षा अकेली राबिया को उपदेश देकर विशेष संतुष्ट होते। इन सब बातों का उल्लेख राबिया के जीवन में आ चुका है।

एक दिन किसी ने उनसे प्रश्न किया ''यदि वैद्य खुद रोगी हो तो वह दूसरे रोगियों का क्या इलाज करेगा?'' उन्होंने उत्तर दिया ''बहुत ठीक सुनो, वैद्य पहले अपनी दवा करेगा फिर दूसरे रोगियों को दवा देगा।''

उपदेश देते–देते एक दिन उन्होंने कहा– ''भाइयों, सुनो। यह उपदेश सुनकर यदि तुम इसके अनुसार चलोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा।'' श्रोताओं में कोई बोल उठा ''हमारा आलसी मन आपका उपदेश ग्रहण ही नहीं कर सकता है, उसके अनुसार चले तो कैसे ? इसका क्या इलाज हो ?'' उन्होंने उत्तर दिया ''तुम्हारा मन आलसी नहीं, वह मरा हुआ है। आलसी होता तो

वह जगाने से जाग जाता पर जो मरा हुआ है वह कैसे जागे ?''

किसी ने हुसैन बसराई से पूछा– ''कई लोग आपकी बात नहीं मानते और आपकी निन्दा करते हैं, उनका क्या इलाज किया जाये ?''

महात्मा बाले, ''मैं तो एक उस ईश्वर के साथ की अभिलाषा रखता हूँ। लोगों के विरोध या निन्दा से मुक्त होने की मैंने कभी इच्छा नहीं की। सबको मनाने वाला वह ईश्वर भी अश्रद्धालु निन्दकों की जीभ से नहीं बच पाया, तो मैं उससे बचने वाला कौन ?''

एक दिन वे सभा में उपदेश दे रहे थे। उसी समय बादशाह हैजाज अपने दलबल सहित आये। यह देखकर किसी ने कहा, ''आज हुसैन की परीक्षा हो जायेगी। बादशाह को देखते ही वे बोलते–बोलते रुक जायेंगे।'' बादशाह के आकर बैठ जाने पर भी उन्होंने उनकी तरफ नज़र तक नहीं उठाई। वे अपना उपदेश देते रहे। यह देखकर वह व्यक्ति समझ गया कि हुसैन सचमुच हुसैन हैं। सभा समाप्त होने पर बादशाह हैजाज हुसैन के पास आये और भक्ति भाव से उनका हाथ चूमकर उन्होंने सब लोगों से कहा– ''यदि तुम्हें साधु पुरुष के दर्शन करने हो तो हुसैन के दर्शन करो।''

हजरत पैगम्बर मुहम्मद साहब के धर्म–प्रचारक हजरत अली ने एक दिन सभा में आकर हुसैन से कहा, ''तुम ज्ञानी हो अथवा ज्ञानेच्छु ?'' हुसैन ने उत्तर दिया, ''मैं ज्ञानी नहीं, पैगम्बर साहब से मैंने जो ज्ञान और सत्य जाना है उसी को मैं यहाँ दोहराता हूँ।''

यह सुनकर हज़रत अली साहब लौट गये और कहते गये ''हुसैन एक सच्चे साधु और उत्तम वक्ता हैं।'' उनके लौट जाने पर हुसैन बसराई को मालूम हुआ कि वे तो कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे, वे पूज्य हज़रत अली थे। वे तुरन्त उपदेश करना छोड़कर उनके पीछे दौड़े। हज़रत अली साहब के पास पहुँचकर उन्होंने विनयपूर्वक कहा, ''ख़ुदा के वास्ते आप मुझे वजू अंग शुद्धि करना सिखावें।'' वहीं जलपात्र मंगवाया गया और अली ने हुसैन को वजू करना सिखाया। जिस स्थल पर यह घटना हुई थी उसका नाम 'मायोलतेस्त' अर्थात् जलपात्र पड़ गया।

काल कभी भी आ सकता है यह समझकर वे सदा सावधान रहते। उन्हें हँसते किसी ने कभी नहीं देखा। एक दिन एक आदमी को रोते देखकर उन्होंने उसका कारण पूछा। उसने जवाब दिया, ''मुहम्मद कावेर के पास मैं गया था तो उनसे मुझे मालुम हुआ कि धार्मिक पुरुषों में भी एक ऐसा है जिसे कई वर्ष तक नरक में रहकर अपने पाप का फल भोगना होगा। उसी बात के डर से मैं रो रहा हूँ।'' यह सुनकर हुसैन बोले, ''वह पापी और कोई नहीं, मैं ही हूँ।''

बाल्यावस्था में हुसैन ने एक पाप किया था। उस पाप को सदा याद रखने के लिये वे जब भी कोई नया कपड़ा पहनते उस पर वह बात लिख लेते और उसे याद करके रोते–रोते बेहोश हो जाते।

मलिक दीनार ने कहा है कि ''मैंने एक दिन हुसैन से पूछा– महात्मन्! बुरे से बुरा दुर्भाग्य क्या है?'' उन्होंने कहा– ''मन की मौत।'' मैंने पूछा– ''मन की मौत कैसे होती है? उन्होंने बताया–''संसार में आसक्ति होना मन का मरना है।''

हुसैन दूसरे सब लोगों को अपने से श्रेष्ठ मानते और अपने आप को सबसे नीच। एक दिन दजला नदी के तट पर उन्होंने एक आदमी को एक औरत के बगल में बैठकर शराब पीते देखा। उसे देखकर उसके मन में यह विचार उठा कि यह आदमी भी क्या मुझसे भला है? हरगिज़ नहीं। यह शराबी है, दुर्व्यसनी है। इतने में नदी में एक नाव दिखाई दी जिसमें सात आदमी बैठे थे। अकस्मात् नाव उलट गई और वे मुसाफिर डूबने लगे। पलक झपकते ही वह शराबी नदी में कूद पड़ा और उसने बड़ी बहादुरी के साथ सात में से छः को बचा लिया। उसने हुसैन से कहा– ''अब तू सिर्फ एक को ही बचा ले। ऐ मुसलमान! धर्म के उपदेशक, यह औरत मेरी माँ है और मेरी इस बोतल में शराब नहीं पानी है। मुझे तो सिर्फ तेरी परीक्षा लेनी थी। मैं जान गया तू तो अन्धा है।'' यह सुनकर हुसैन शरमा गये और विनम्र भाव से उसके चरणों में गिर कर उन्होंने माफी मांगी। शिक्षा देने के लिए उसे ईश्वर प्रेरित समझकर हुसैन ने कहा– ''आपने नदी की

विकराल तरंगों से छः मनुष्यों को बचाया है उसी प्रकार अहंकार रूपी नदी की तरंगों से मेरा भी उद्धार करें।'' वह बोला– ''तेरा उद्धार हो, तेरी आँखे खुल जायें।'' इतना कहकर वह व्यक्ति चला गया। इस घटना से हुसैन का अहंकार दूर हो गया और उन्होंने किसी को अपने से नीच और अपने आपको किसी से उच्च मानना छोड़ दिया।

एक बार एक कुत्ता उनके पास आकर खड़ा हो गया। उसे देखकर किसी ने उनसे पूछा– ''आप श्रेष्ठ हैं या यह कुत्ता?'' वे बोले ''यदि मैं अपने धार्मिक जीवन की रक्षा कर सकूँ तो मैं श्रेष्ठ, और यदि न कर सकूँ तो मेरे जैसे सौ हुसैनों से यह कुत्ता ही श्रेष्ठ होगा।''

हुसैन ने कहा कि उन्हें एक शराबी, एक बालक और एक स्त्री के आगे बहुत शर्मिन्दा होना पड़ा। एक दिन एक शराबी नशे में चूर पैर लड़खड़ाता चला जा रहा था, उसे देखकर उन्होंने कहा– ''अरे भाई, पाँव सम्भालकर चल नहीं तो गिर जायेगा।'' उत्तर में वह बोला– ''अरे भलेमानस! तू मुझे कहने वाला कौन? अपने पैर तो संभाल। तू तो एक धर्मात्मा कहलाने वाला है और मैं तो हूँ सरेआम शराब पीने वाला। मैं गिर जाऊँगा तो पानी से धोकर शरीर साफ कर लूँगा। पर कहीं तू फिसल गया तो तेरी शुद्धि होनी मुश्किल हो जायेगी।'' यह सुनकर हुसैन शर्मिन्दा हो गये। दूसरी बार ऐसी घटना हुई कि एक बालक हाथ में एक दीपक लिये आ रहा था। हुसैन ने उससे पूछा– ''यह दीया कहाँ से लाये हो? इतने में हवा के झोंके से दीपक बुझ गया। बालक इस पर हुसैन से पूछ बैठा– ''पहले तुम्हीं बताओ अब वह कहाँ चला गया? तब मैं बताऊँगा कि मैं उसे कहाँ से लाया था।'' तीसरी घटना ऐसी हुई कि एक दिन एक सुन्दरी युवती बिना घूँघट के उनके सामने आकर अपने पति की बेवफाई पर नाराज होकर उसकी निन्दा करने लगी। हुसैन उसे इस प्रकार निर्लज्ज देखकर बोले– ''पहले अपने कपड़े तो संभाल, मुँह तो ढक फिर जो कुछ कहना हो सो कहना।'' वह स्त्री बोली– ''अरे भाई, मैं तो प्रभु के सिरजे हुए एक प्राणी के प्रेम में मुग्ध होकर बेहोश हो रही हूँ, मुझे अपने तन बदन का क्या ख़्याल? आप मुझे सचेत

न कर देते तो मैं ऐसे ही उसे खोजने के लिए बाजार में निकल जाती। पर यह कैसे अचरज की बात है कि प्रभु के प्रेम में पागल होकर भी आपको इतनी सुध है कि आप यह जान गये कि मेरा मुँह खुला है या ढका ?

एक दिन एक व्यक्ति ने महात्मा हुसैन और उनके धर्म बन्धुओं की प्रशंसा करते हुए उन्हें पैगम्बर मुहम्मद साहब और उनके साथियों के समान बता दिया। दूसरे सब तो बहुत खुश हुए, परन्तु हुसैन ने कहा, ''शरीर के इन अंगों में ही तुम्हें समानता मालूम देती हो तो दूसरी बात है, पर उनकी धार्मिकता से हमारी क्या तुलना ? वे तो धर्म कार्य में तल्लीन रहते थे, उन्हें देखते हुए तो हममें से कोई भी सच्चा मुसलमान नहीं है। वे सब तेज घोड़े पर सवार स्वर्ग की ओर दौड़ रहे हैं और हम लोग मरियल गदहों पर चढ़कर धीरे–धीरे चल रहे हैं।

सहनशीलता के विषय में एक दिन उन्होंने एक मुसाफिर से कहा था– ''सहनशीलता दो प्रकार की होती है– 1.दुःख अथवा आपातकालीन 2. ईश्वर के द्वारा निषिद्ध बातों के विषय में। इसके आगे धैर्य के बारे में कई अच्छी बातें सुनकर उस मुसाफिर ने कहा– ''मैंने आपके सरीखा सहनशील न देखा न सुना।'' इस पर वे बोले– ''भाई, मेरे धैर्य और अधैर्य का कारण मेरा वैराग्य है, यही मेरी आसक्ति है। सच्चा धीरज अथवा सहनशीलता तो वही है जिसका आधार ईश्वर की प्रीति है। एक ईश्वर की प्राप्ति के लिए जिसके मन में वैराग्य उपजा हो, वही सच्चा वैरागी है, स्वर्ग के लोभ से वैरागी बना हो तो वह असली वैरागी नहीं है।''

एक व्यक्ति बीस वर्ष से सामूहिक प्रार्थना में नहीं आया था और न किसी से मिलता जुलता ही था। हुसैन उसके पास गये। सामूहिक प्रार्थना में न आने का कारण पूछा तो उसने कहा– ''भाई मुझे बहुत काम रहता है। हुसैन ने पूछा ''ऐसे कौन से काम हैं ?'' इस पर उस व्यक्ति ने उत्तर दिया ''भाई, अपने शरीर की हर एक साँस में मैं एक भी साँस ऐसी नहीं देखता जिसमें उस ईश्वर की करुणा और ईश्वर के प्रति मेरा अपराध न समाया हो। उस करुणा के लिए प्रभु की कृतज्ञता प्रकट करने और अपराध

के लिए क्षमा माँगने के काम में मैं लगा रहता हूँ। इसीलिए सामूहिक प्रार्थना (उपासना) करने और मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए मैं नहीं आ सकता।'' हुसैन बोले ''बहुत ठीक भाई, तू अपने रास्ते पर चल। तू मुझसे कहीं अधिक श्रेष्ठ है।''

किसी ने हुसैन से पूछा– ''कभी आपको हर्ष हुआ है, कोई ऐसा प्रसंग आया जब तुमने आनन्दाश्रु बहाये ?''

उन्होंने उत्तर दिया ''हाँ, एक बार ऐसा प्रसंग आया था। एक दिन मैं अपने मकान के पास पालथी मारे बैठा था। मैंने सुना मेरे पड़ोसी की स्त्री अपने पति से कह रही थी– ''देखो, मैं पचास वर्ष से तुम्हारे घर में हूँ। घर में कोई चीज हो या न हो, मैंने जैसे तैसे काम चला लिया है, पर मैंने तुम्हें एक भी शब्द नहीं कहा है। तुम्हारे साथ मैंने सर्दी–गर्मी सब कुछ सहा है। गहने कपड़े के लिए मैंने तुमसे कभी फरियाद नहीं की, सदा तुम्हारी इज़्ज़त आबरू का ख़्याल रखकर चलती रही हूँ। किसी पड़ोसी से भी मैंने तुम्हारी बुराई का ज़ि क्र नहीं किया। मैं सब तरह से तुम्हारी होकर रही हूँ और वह इसलिए कि तुम दूसरी स्त्री न ब्याहो। ये सब कष्ट मैंने इसी एक आशा से सहे हैं। तुम यदि एक मुझे ही अपनी मानोगे तो मैं तुम्हारी होकर रहूँगी, लेकिन आज तुम्हारी नज़र किसी दूसरी स्त्री से लड़ी दिखाई देती है। जाती हूँ मैं काजी के पास इस बात की फरियाद कर आती हूँ।'' उस स्त्री की यह बात सुनकर मेरी आँखे भर आईं और उन आनन्दाश्रुओं से मैं गदगद हो गया। इस बात का खुलासा मुझे कुरान में इस प्रकार मिला– ''जो मनुष्य अपने दिल में ईश्वर के साथ किसी दूसरे को भी जगह देता है, उसे ईश्वर माफ नहीं करता। जो मनुष्य एक मात्र ईश्वर को ही चाहता है, उसे ही क्षमा मिलती है। ईश्वर ने कहा है– ''मैं तुम्हारे सब अपराध क्षमा कर दूँगा, यदि तुम्हारे हृदय के किसी कोने में भी दूसरी किसी चीज की इच्छा होगी तो मैं क्षमा नहीं कर सकूँगा।''

एक मनुष्य ने महात्मा हुसैन से पूछा– ''आप कैसी हालत में हैं ?'' उन्होंने कहा– ''गहरी नदी में नौका के डूब जाने से डुबकियाँ खाते हुए

एक लकड़ी के टुकड़े के सहारे प्राण बचाने की चेष्टा करने वाले मनुष्य की हालत कैसी होती है ?'' उसने उत्तर दिया ''बहुत ही खराब'' हुसैन ने कहा ''मेरी भी हालत ठीक वैसी ही है।''

''ईद के दिन बहुत से लोगों को इकठ्ठे होकर मौज–मजा और हँसते बोलते देखकर मुझे बहुत ही अचरज हो रहा है। जो अपनी सच्ची हालत का विचार किये बिना ही राग–रंग में मस्त हो रहे हैं। यदि वे सब अपनी असली हालत को पहचान जायें तो फिर एक पल भी ये यों व्यर्थ न जाने देंगे।''

महात्मा हुसैन ने एक बार इस प्रकार प्रार्थना की– ''हे प्रभु! तूने मुझे सम्पत्ति दी तो भी मैंने तेरा गुणगान नहीं किया, तूने विपत्ति दी तो मैंने धीरज नहीं रखा, मैंने तेरी कृतज्ञता नहीं मानी तो भी तूने दी हुई सम्पत्ति वापस नहीं ली और मैंने धीरज नहीं धारण किया तो भी तूने विपत्ति को स्थायी नहीं बनाया। हे प्रभु! मैं तेरी कृपा का कितना गुणगान करूँ ?

मरते समय हुसैन हँसे थे, उससे पहले किसी ने उन्हें हँसते नहीं देखा था। मरते समय वे हँसकर कह उठे थे– ''कौन सा पाप ? फिर कौन सा पाप ?'' उसी समय एक वृद्ध ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया ''मैंने अभी एक देव वाणी सुनी है– 'हे काल! इसे जकड़ कर बाँध। अब इसके जीवन में एक पाप बाकी है।' मैं यह जानकर हँस पड़ा कि बस एक ही पाप बाकी है और पूछ बैठा कि कौन सा पाप ?'' उसके बाद उनका देहावसान हो गया।

उपदेश वचन

1. मनुष्य की अपेक्षा तो भेड़ बकरी भी अधिक सचेत होते हैं, क्योंकि वे गढ़ेरिये की आवाज सुनकर खाना पीना भी छोड़कर उसकी ओर तुरन्त दौड़ पड़ते हैं, दूसरी ओर मनुष्य इतने लापरवाह हैं कि ईश्वर की ओर जाने की बांग सुनकर भी उधर न जाकर आहार–विहार में तल्लीन रहते हैं।

2. सुरापान और संसार की आसक्ति में से एक बात को चुन लेने के लिए मुझे कहा जाये तो मैं सुरापान को चुनूँगा, संसार की आसक्ति सुरापान से भी अधिक खराब है।
3. जब मैं देख लूँगा कि मेरे मन में ईश्वर के विरोध का एक कण भी शेष नहीं रह गया है, तभी मैं समझूँगा कि मुझे सच्चा ईश्वर ज्ञान हुआ है।
4. अपने पास बहुत से नौकर-चाकर देखकर एक अज्ञानी ही फूला नहीं समाता।
5. यदि किसी पर तुम्हें हुक्म चलाना है तो पहले तुम उसके हुक्म बजाने वाले बनो।
6. मेरे कुटुम्बी, स्त्री, पुत्रों की अपेक्षा मुझे मेरे धर्म के साथी अधिक प्रिय हैं, कारण वे धर्म में सहायक होते हैं। घर वाले तो धर्म कार्य में बाध ाक भी हो जाते हैं।
7. इन्द्रियासक्ति मनुष्य, दुराचारी धनवान और अत्याचारी आचार्य इन तीनों के दोष प्रकट करना निन्दा करना नहीं है।
8. विषयी व्यक्ति इन तीन बातों का अफसोस करते-करते मरता है कि इन्द्रियों के भोग से तृप्त नहीं हो पाया, मन की आशायें अधूरी ही रह गईं और परलोक में जाने की तैयारी नहीं कर पाया।
9. जिसने अपना बोझ हल्का कर लिया वही पार उतर सकता है। जिसने अपना बोझ बढ़ा लिया है वह तो डूबेगा ही।
10. जो मनुष्य संसार को नाशवान व धर्म को सदा का साथी समझकर चलता है वही उत्तम गति पाता है। जो नाशवान चीजों का मोह छोड़कर, संसार का भार प्रभु पर छोड़कर भार रहित हो जाता है वह सहज ही संसार सागर तर जाता है।
11. परलोक को तोड़कर उसके सामान से संसार बनाने वाले की अपेक्षा संसार को तोड़कर परलोक का महल खड़ा करने वाला अधिक चतुर है। वही सच्चा ज्ञानी है।

12. जो मनुष्य ईश्वर को पहचानता है वही उस पर विश्वास और प्रेम रख सकता है, किन्तु जो संसार को पहचानता है वह ईश्वर से शत्रुता ही निबाहता है।
13. दुनियाँ में इन्द्रियों को बाँधने के लिए जैसी मजबूत सांकल चाहिए वैसी मज़बूत सांकल पशुओं को बांधने के लिए भी नहीं चाहिए।
14. तुम्हारी मृत्यु के बाद संसार तुम्हारे बारे में क्या कहेगा यह जानना हो तो दूसरे जो मर गये हैं, उनके बारे में संसार क्या कहता है उसे सुनो।
15. तुम्हारे पूर्वज ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए चलते थे। रात को वे उसका चिन्तन करते थे और दिन में उसके मुताबिक बर्ताव करते थे। पर तुमने वैसा करना छोड़ ही नहीं दिया, उल्टे ईश्वर की आज्ञाओं के उलटे–सुलटे अर्थ लगाकर तुम संसार में आसक्ति बढ़ाने वाले लेख तैयार कर रहे हो।
16. हजार वर्ष तक बिना मन लगाये नमाज पढ़ने और रोजा करने के बजाए एक कण के बराबर संसार के प्रति सच्ची अनासक्ति बढ़ाना अधिक उत्तम है।
17. तुम्हारा चिन्तन तुम्हारा दर्पण है, क्योंकि तुम्हारे शुभाशुभ का हाल वह बता देगा।
18. जो बिना विचार बोलता है उसे विपत्ति में पड़ना पड़ता है। जो बिना विचारे मौन रहता है, उसके मन में बुरी इच्छायें और आलस्य स्थान कर लेते हैं। जिसकी दृष्टि वश में नहीं रहती, उसे कुमार्ग पर जाना पड़ता है।
19. जिसने वासनाओं को पैरों तले कुचल दिया है, वही मुक्त है। जिसने ईर्ष्या का त्याग कर दिया है उसी ने प्रेम को पाया है, जिसने धीरज धारण किया है उसने शुभ परिणाम पाया है।
20. जब तक हृदय संकेत नहीं करता, ज्ञानी मौन रहते हैं। उनकी जीभ से वही बात निकलती है, जो उनके हृदय में होती है।

21. अनासक्ति की तीन अवस्थायें हैं– 1. साधक स्वयं बड़ा महात्मा, शोधक अथवा लोगों का उद्धारक हो तो भी वैसे नहीं बोलना, किन्तु एकमात्र ईश्वर की आज्ञाओं का परदा हटाते रहना। 2. जिस बात को प्रभु पसंद नहीं करते उससे अपनी इन्द्रियों को बचाना, 3. जिस बात से प्रभु खुश होते हैं उस पर आचरण करने का प्रयत्न करना।

भगवान को पुकारो

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने एक दिन श्रद्धालु जनों को उपदेश देते हुए कहा, 'प्रत्येक प्राणी में ईश्वर के दर्शन करने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपना हृदय मंदिर के समान पवित्र रखना चाहिए।'

एक गृहस्थ सज्जन ने उपदेश सुनने के बाद परमहंस जी से विनम्रता से पूछा, 'महाराज, प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का निवास कैसे हो सकता है? मैं सांसारिक व्यक्ति हूँ जाने–अनजाने पाप होते रहते हैं। कोई मुझमें ईश्वर देखने लगे तो यह कैसे उचित होगा?' स्वामी जी ने कहा, 'अपने अंदर पाप ही क्यों देखते हो? क्या गृहस्थ और सांसारिक व्यक्तियों पर भगवान की कृपा नहीं होती? हमारे देश में ऐसे अनेक गृहस्थ हुए हैं, जिन्होंने पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए सदाचार का जीवन बिताया और भगवान के दर्शन किए। जिसने दुर्गुणों को त्यागकर खुद को भगवान के सामने अर्पित कर दिया, वह स्वयं भगवान के समान पवित्र बन गया।'

स्वामी जी ने आगे कहा, 'अबोध शिशु जब रो–रोकर मां–मां की रट लगाता है, तो मां दौड़ी चली आती है और बालक को गोद में उठा लेती है। वह यह नहीं देखती कि बालक गंदा तो नहीं है। भगवान तो माताओं की भी माता हैं। यदि भक्त सच्चे हृदय से प्रार्थना करता रहे, तो वह दौड़े चले आते हैं। शर्त यही है कि शुद्ध हृदय से प्रार्थना करना चाहिए। प्राणी मात्र के प्रति यदि प्रेम पनपने लगे, तो समझो कि भक्ति पथ पर बढ़ने लगे हो। परमहंस जी की बातें सुनकर जिज्ञासु की समस्या का समाधान हो गया।

दादा गुरुदेव के पत्र

(1)

प्रिय भाई परमानन्दजी, नमस्ते,

आपकी दूसरी चिठ्ठी मिली। मेरा पक्का इरादा था कि 25 को चलकर 26 को आपके पास पहुचूँ। आपको व दूसरे भाइयों को खबर भी कर दी थी। कुछ भाई जो बाहर से आये हुए थे उनको भी वापिस जाने को कह दिया था और जो आने वाले थे, उनको मना कर दिया था। लेकिन आज सुबह से मेरी तबियत ख़राब है, हल्का बुखार है और पेट ख़राब है, तमाम बदन में दर्द है। मैं अकेला हूँ। ऐसी हालत में मेरी हिम्मत नहीं पड़ती। और आपकी परेशानियों को समझते हुए भी जाने का इरादा मुल्तवी करना पड़ा और आपको तार के ज़रिये ख़बर करनी पड़ी, जिसका मुझे अफसोस है। तुमको यह पहला धक्का है, इस वास्ते इतने परेशान हो। जो आया है उसको मरना है और इसमें किसी का दख़ल नहीं। मैंने लाख कोशिश की लेकिन कट्टो को न बचा सका परमात्मा किसी न किसी बहाने से जान लेता है और ख़्याल यह होता है कि हमारी ग़लती से जान ली गई। यह तुमको धोखा है। जान लेने और देने वाला एक ही है। इसमें किसी का हाथ नहीं। इससे तुम्हें तर्जुबा हासिल करना चाहिए कि दुनियाँ की सब चीज़ नाशवान है और सबको मरना है। जिससे ज़्यादा मोहब्बत है उसी के मरने पर ज़्यादा दुःख होता है। फिर अब वह शक्ल कभी भी नहीं दिखाई देगी और न तुम को मिल सकती है। उसके लिए रोना बेफायदा है। सब्र करो और सबको सब्र दिलाओ। यह तुम्हारी अज्ञानता है जो तुमको परेशान कर रही है। अच्छा तो यह है कि तुम 15–20 सितम्बर तक सिकन्दराबाद आ जाओ ताकि कुछ दिनों मेरे पास रह सको। अगर तबियत परेशान है तो तुम अभी सिकन्दराबाद आ जाओ। मुझको अफसोस है कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिश को पूरा न कर सका। यह तुम्हारा वहम है कि बच्चे की रूह परेशान है, यह तुम्हारा अपना ख़्याल है। बच्चे मासूम होते हैं और उनकी रूह परेशान नहीं होती। मैं दुआ करता हूँ कि परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे

और तुमको सब्र दे। जिसका बच्चा था उसने ले लिया। तुम किसी सूरत से भी उसको नहीं रोक सकते थे। दिल को समझाओ, सिर्फ यही एक इलाज है।

बच्चों को प्यार।

शुभचिन्तक
श्रीकृष्ण

(2)

प्रिय परमा बाबू, नमस्ते

आपके कई ख़त मिले। मैं आपकी ख़्वाहिश को जानते हुए भी शादी के मौके पर न पहुँच सका। शादी ठीक से हो गई, परमात्मा का लाख-लाख शुक्र है। इन्सान की हालत हमेशा बदलती रहती है। आज अगर बादशाह है तो कल फकीर भी हो सकता है। ख़ुश वही रह सकता है जो ज़माने के साथ-साथ अपनी हालत को बदलता चले। दुनियाँ के मामले में हर शख़्स को आजादी है कि जो उसके पास पूँजी है यानी जो उसके पिछले संस्कार हैं उसके मुताबिक उसे खर्च करे। ईश्वर न इसमें मदद करता है न रोकता है। इन्सान इसमें आजाद है। अपनी तकदीर बनाने वाला वह ख़ुद है। परमार्थ के हासिल करने के लिए जो मदद मांगी जाती है उसमें वह मदद करता है। जो तुमने किया है वह तुम जरूर भोगोगे, इसमें दुआ से काम नहीं चलता। हाँ, अगर उस पर भरोसा रखोगे तो कर्म आसानी से कट जायेंगे। यह ख़्याल दिल में पुख़्ता कर लो कि जिसका लिया है उसको ज़रूर देना है। अपने सब खर्चों को कम कर दो। अपनी पिछली माली हालत को भूल जाओ, अपनी मौजूदा हालत के मुताबिक खर्च करो। काम इतना अपने जिम्मे लो जिसका तुम इन्तजाम कर सको। जहाँ तक मुमकिन हो मामलात में सफाई बरतो। हरेक चीज़ व हरेक मुसीबत का हिम्मत से मुकाबला करो। मुसीबतें हिम्मत से ही मिटती हैं। परमात्मा मदद करेगा। मैं दुआ करता हूँ।

बच्चों को प्यार।

शुभचिन्तक
श्रीकृष्ण

(3)

प्रिय भाई परमानन्द जी, नमस्ते,

आपकी चिठ्ठी मिली। मैं नहीं चाहता था कि तुम अभी मेरे पास आओ और तुम नहीं आये, इसमें तुम्हारा क्या कसूर है ? मेरी ख़्वाहिश है कि तुम्हारी आर्थिक स्थिति ठीक हो जावे और उम्मीद करता हूँ कि यह ठीक हो जावेगी। मैं यहाँ से कल फतेहगढ़ जा रहा हूँ और अगर परमात्मा को मंजूर है तो 13 ता. को गोरखपुर पहुँचूगा। तुम परेशान मत हो जो कुछ हो रहा है, ठीक हो रहा है और इसी में तुम्हारी भलाई है। मन बड़ी मुश्किल से और आहिस्ता–आहिस्ता अपनी धार छोड़ता है और इसका बदलना ही असली फायदा है। मन को संवारने की हर वक्त फिक्र रखो। परमात्मा मदद करेगा।

शुभचिन्तक
श्रीकृष्ण

(4)

प्यारी बेटी,

खुश रहो।

तुम्हारा हाल मालूम हुआ। गोश्त वग़ैरह का खाना जो ज़ायके के लिए खाया जाये बुरा है। लेकिन डाक्टर के कहने से बीमारी की वजह से खाया जाता है तो कोई बुरा नहीं है। यह जानकर खुशी हुई कि अब तुम ठीक हो। तुम्हारी हालत पहिले से अच्छी है या खराब मिलने पर समझा दूँगा।

बच्चों को प्यार।

शुभचिन्तक
श्रीकृष्ण

- ईश्वर से कुछ मांगने पर न मिले तो उससे नाराज न होना क्योंकि ईश्वर वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता हैं बल्कि वह देता हैं जो आपके लिये हमेशा अच्छा हैं।

रामाश्रम सत्संग गाज़ियाबाद की आम सभा की बैठक दिनांक 30 सितम्बर का संक्षिप्त विवरण

स्थानः– सरस्वती शिशु मंदिर गाज़ियाबाद

रामाश्रम सत्संग गाज़ियाबाद की आम सभा की बैठक परम पूज्य गुरुदेव डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना जी की अध्यक्षता में दिनांक 30 सितम्बर 2017 को सम्पन्न हुई। बैठक में कार्यकारिणी, शिक्षक वर्ग और 600 से अधिक सदस्यों ने भाग लिया। सभा का आरम्भ गुरुदेव की आराधना के साथ हुआ और फिर ऐजेंडा के मुताबिक कार्यवाही की गई।

प्रस्ताव नं (1) सबसे पहले वार्षिक रिर्पोट जो कि कार्यकारिणी द्वारा पारित की गई थी को मंत्री द्वारा बैठक में प्रस्तुत किया गया। इस रिर्पोट के कुछ अंश इस प्रकार हैंः

वार्षिक रिर्पोटः– भण्डारे के शुभ अवसरों पर हम अपने बुर्जुगों को नमन कर उनका आवाहन कर उनका प्रेम और आशीर्वाद प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। ऐसा माना जाता है कि भण्डारों के अवसर पर बुजुर्गो की विशेष कृपा रहती है। यह हमारे अच्छे संस्कार हैं या फिर ईश्वर की कृपा है, कि हमें सत्संग में आने का अवसर प्राप्त हुआ है। यह मामूली बात नहीं है। हम सब न जाने कौन कौन सी योनियों में हो कर मनुष्य योनी में आये हैं। परम पूज्य दादा गुरुदेव, परमसंत डॉ. श्री कृष्णलाल जी महाराज ने अपने एक प्रवचन में ज़ोर दे कर बताया है कि **''मनुष्य योनी में आ कर भी कम से कम दस जन्मों के बाद गुरु की शरण नसीब होती है।''** और उन्होंने आगे फिर फरमाया है कि **''बिना ईश्वर कृपा के गुरु नहीं मिलता और बिना गुरु कृपा के ईश्वर नहीं मिल सकता है।''**

हम सब कितने भाग्यशाली हैं कि इस जन्म में ईश्वर कृपा से ही नक्शबंदिया खानदान के बुर्जुगों के ज़ेरे साये और परम पूज्य भाई साहब डॉ शक्ति कुमार सक्सेना जी के सानिध्य में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं और इन महान विभूतियों की शरण में आज महफूज़ हैं। इस

अवसर के महत्व को हमें पूज्य दादा गुरुदेव परमसंत डॉ. श्री कृष्णलाल जी महाराज एक बार फिर समझाया है कि **"साँस खाली जा रहा है, सुनहरा अवसर खो रहे हो। क्या इसका अफसोस नहीं है?? मनुष्य जन्म और संत मिलन बार–बार नहीं होता है। इस वक़्त को ग़नीमत जानो और लग लिपट कर अपना काम बना लो"** यह एक बहुत बड़ी चेतावनी है हम सब के लिये। गुरुदेव डॉ करतार सिंह जी साहब बार–बार अपने प्रवचनों में हमें चेताया करते थे कि **"समय थोड़ा है, कब क्या हो कोई नहीं जानता... कोशिश जारी रखिये।"** हम लोग कई दफा हताश हो कर गुरुदेव से कहते थे ...कितने वर्ष हो गये हैं कुछ तरक्की नहीं दिखाई देती, एक निराशा सी मन में आ गई है। ऐसा हम में से कई लोगों के साथ हुआ होगा। लेकिन गुरुदेव क्या फरमाते थे **"कोई डर नहीं... हिम्मत नहीं हारना है... कोशिश करते रहिये"** वे कहा करते थे **"Try again.... Try again हम बार–बार फेल होंगे... कोई डर नहीं... फिर कोशिश करेंगे... फिर से शुरू करेंगे... क्योंकि मनुष्य जन्म बार बार नहीं मिलता और फिर गुरु की शरण तो कब दोबारा मिलेगी कोई नहीं जानता।"** इसलिये आज एक बार फिर भण्डारे के शुभ अवसर पर हम सब मिल कर अपने सभी बुजुर्गों के चरणों में प्रार्थना करें कि जो कुछ भी समय हर किसी के पास बचा है, हम नहीं जानते, हम पर कृपा करें, दया करें कि जो कुछ भी जिससे बन पड़े, कर लें।

"नानक मैं कोउ गुन नाहीं, राख लेयो सरनाई".....
"दया करो ...दया करो ...दया करो ...मेरे साईं"

आज परमपूज्य भाई साहब डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना जी के सान्निध्य में बैठ कर हम अपने बुज़ुर्गों की कृपा और आर्शीवाद से फैज़याब हो रहे हैं। इसके साथ ही हमारे बुर्जुगान की बरक़त और कृपा से, कई सेंटरों पर सत्संगी भाई बहनों द्वारा समय–समय पर विषेश आयोजनों पर दरिद्रनारायण की तरह–तरह से सेवा की गई। संक्षेप में जो सामाजिक कार्य किये गये वे इस प्रकार हैं– बच्चों, महिलाओं और बुर्जुगों के लिये गर्म कपड़े बाँटना, पढ़ाई की किताबें और यूनिफार्म देना, जून भण्डारे के अवसर पर कई सेंटरों में भोजन वितरित किया गया, आदि आदि।

आइये इस अवसर पर अपने पूर्वजों को एक बार फिर से श्रृद्ध ापूर्वक नमन कर अपने आप को उनके चरणों में समर्पित करें और प्रार्थना करें कि वे ही हमें शक्ति प्रदान करें कि जैसा वे चाहते थे वैसा हम बन सकें।

अंत में रामाश्रम सत्संग की ओर से हम उन सभी संस्थाओं का, सरकारी अधिकारियों का और सभी सत्संगी भाई बहनों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग के बिना जगह–जगह पर सत्संग के आयोजन करना संभव नहीं होता। हमें उम्मीद है कि जो सहयोग आप सब का मिल रहा है वह आगे भी मिलता रहेगा।

प्रस्ताव नं (2) – असित मेहता एंड कं जो कि रामाश्रम सत्संग के कई वर्षों से ऑडिटर हैं, के श्री अनिल खन्ना जी ने उपस्थित सदस्यों को वर्ष 2016–2017 की एकाउंट्स और ऑडिट की रिर्पोट पेश की जिसे सभी सदस्यों ने एकमत से हाथ उठा कर अपनी सहमति प्रदान की।

प्रस्ताव नं (3) – असित मेहता एंड कं की वर्ष 2017–2018 के लिये पुनः नियुक्ति का प्रस्ताव सभा में मंत्री द्वारा रखा गया जिसे सभी सदस्यों ने हाथ उठा कर अपनी सहमति प्रदान की।

इसके उपरान्त जो घोषणायें की गईं और महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये वे इस प्रकार हैंः–

1. पूज्य अध्यक्ष जी ने श्री अनुराग चन्द्र प्रसाद को श्री ईश्वर स्वरूप सक्सेना जी के स्थान पर रामाश्रम सत्संग का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया है।
2. यह महसूस किया गया कि कुछ एक सेंटरों पर ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो कम्पयूटर और फोन की अच्छी जानकारी रखते हों क्योंकि अक्सर कई दफा ऐसे काम होते हैं जिनको करने के लिये इस प्रकार की क्षमता होने से सहायता मिलती है। अतः ये लोग सेंटर इंचार्ज की सहायता के लिये नियुक्त किये गये हैं और जहाँ ये नियुक्तियाँ हुई हैं वे इस प्रकार हैंः

- पटना में श्री अनिल कुमार, श्री सुनील कुमार और श्री बैकुंठ जी
- चकिया में आनंद कुमार सिंह सुपुत्र श्री हरी सिंह
- भभुआ में अनुराग पाण्डेय सुपुत्र श्री मुक्तेश्वर पाण्डेय
- इन्दरगढ़ में श्री प्रियदर्शन कुमार और श्री राम किशोर
- ग्वालियर में आदर्श किशोर जी
- अलवर में श्री कमलेश कुमार अरोड़ा जी
- जमशेदपुर में श्री आलोक कुमार
- सीतामढ़ी में श्री राजेश कुमार और श्री संत कुमार

आप सबसे अनुरोध है कि इन भाईयों को अपना सहयोग देनें की कृपा करें।

3. सभी सेंटर इंचार्ज को सदस्यता फार्म दिया गया है। सभी भाई बहन जो साप्ताहिक सत्संग में आते हैं उन्हें यह फार्म अवश्य भरना है। इसमें जो जानकारी माँगी गई हैं वह रजिस्ट्रार द्वारा माँगी गई है। आपका सहयोग प्रार्थनीय है।
4. सदस्यों को सूचित किया गया कि रामाश्रम सत्संग गाज़ियाबाद को इंकमटैक्स डिपार्टमेंट की ओर से 12ए का रजिस्ट्रेशन मिल गया है और अब इंकमटैक्स की धारा 80जी के अर्न्तगत अनुमति के लिये आवेदन दाखिल किया जायेगा। इससे सभी सत्संगी भाईयों को आने वाले समय में लाभ मिलेगा।
5. अन्त में इस वर्ष जो भण्डारे तय किये गये हैं वे इस प्रकार हैः
   - 20 से 22 जनवरी तक मोतिहारी में बसंत भण्डारा
   - 17–18 मई का सत्संग बक्सर में
   - 13 से 15 जून तक गोपाल गंज में भण्हारा
   - गुरुपूर्णिमा का सत्संग मुगलसराय में होना निश्चित हुआ है।

इसके उपरान्त मंत्री द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव रखा गया और अध्यक्ष जी से मीटिंग समाप्त करने की अनुमति माँगी जिसकी उन्होंने स्वीकृति प्रदान की और मीटिंग समाप्त हो गई।

बसंत भण्डारे की सूचना

परम पूज्य गुरुदेव महात्मा राम चन्द्र जी महाराज के जन्. मदिवस के शुभ अवसर पर बसंत पंचमी का भण्डारा 20, 21, 22 जनवरी 2018 को मोतिहारी, बिहार में आयोजित किया जा रहा है। इस आध्यात्मिक समागम की पुण्य प्रसादी से लाभान्वित होने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित है। भण्डारे स्थल का पता इस प्रकार हैः–

होटल एस. एस. राय मैरिज हॉल
(डा. चंद्रलता के भवानी नर्सिंग होम के पास)
मोहल्ला अगरवा, मोतिहारी, ईस्ट चम्पारन, बिहार

(यह स्थान रेलवे स्टेशन से 1–1.5 कि.मी. तथा बस स्टैंड से 2–2.5 कि.मी. की दूरी पर है।)

आप 19 जनवरी, को दोपहर बाद पहुँच सकते हैं। निवेदन है कि अपने आने की सूचना कृपया नीचे दिये गये व्यक्तियों में से किसी को भी 15 दिन पहले अवश्य दे दें:–

डा. सुधीर कुमार	फोन – 09470467763, 08677056897
श्री ओम प्रकाश गुप्ता	फोन – 09431638238, 09934245045
श्री बृज किशोर प्रसाद	फोन – 08986588034, 07091592853
श्रीमती मीरा श्रीवास्तव	फोन – 09570461181, 07909056449

मंत्री
रामाश्रम सत्संग (गाज़ियाबाद)

राम संदेश के नियम

1. आध्यात्मिक विद्या के गुप्त और अनुभवी रहस्यों तथा सदाचार–शिक्षा को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाना हमारी राम सन्देश पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।
2. राम–सन्देश में आत्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लेख ही छपते हैं, राजनैतिक या रोमांचक लेख नहीं। रचनाओं में काट–छाँट करने अथवा छापने या न छापने की स्वतंत्रता सम्पादक को है।
3. राम सन्देश का वर्ष जनवरी में आरम्भ होता है। वार्षिक चन्दा 20 (बीस) रुपये है। एक वर्ष से कम तथा आजीवन ग्राहक नहीं बनाये जाते। चन्दा दशहरा भंडारों में या मैनेजर, राम संदेश को, 9–रामाकृष्णा कॉलोनी, जी. टी. रोड, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.) 201009 के पते पर दिसम्बर के अंत तक अवश्य भिजवा दें।
4. राम सन्देश डाक द्वारा नहीं भेजा जाता है। इसका वितरण भंडारों पर ही किया जाता है। कृपया अपनी प्रति लेना न भूलें।

राम संदेश

रजिस्टर्ड ऑफिस

9–रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी. रोड,
गाज़ियाबाद–201009

मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

मुद्रण : अंकोर पब्लिशर्स (प्रा.) लिमिटेड, बी–66, सैक्टर–6, नोएडा–201301